आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 8 अंक : 10 जून, 2021 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति कर्नल (प्रो.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

विश्व दुग्ध दिवस की महत्ता को समझें

प्रिय पशुपालक एवं किसान भाइयों एवं बहनों। राम–राम सा।

सबसे पहले मेरी तरफ से आप सभी को विश्व दुग्ध दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। प्राचीन काल से ही गाय के दुग्ध को गौरव एव अमृत माना गया है, तथा दुग्ध को सम्पूर्ण आहार के रूप में मान्यता भी प्राप्त है। वर्ष 2001 में दुग्ध एवं दुग्ध के महत्व को वैश्विक रूप में पहचान दिलाने के लिए संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन द्वारा प्रत्येक वर्ष 1 जून को विश्व दुग्ध दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में डेयरी उद्योग की प्रमुख भूमिका है जिस पर ग्रामीण क्षेत्र के काफी लोग निर्भर है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के बाद पशुपालन अथवा दुग्ध व्यवसाय बेरोजगारों की आय का प्रमुख स्त्रोत है। यह दिन डेयरी सेक्टर से जुड़ी हुई गतिविधियों, दूध पर विशेष ध्यान केन्द्रीत करने व प्रचार–प्रसार के अवसर प्रदान करता है। दुग्ध को वैश्विक आहार के रूप में पहचान मिली है। लगभग आम लोगों की दिनचर्या भी दुग्ध से शुरू होती है। दुग्ध शरीर के लिए आवश्यक सभी पौषक तत्वों का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है, इसमें कैल्शियम, मैग्नीशियम, जिंक, ऑयोडिन, फास्फोरस, आयरन व विटामीन्स, प्रोटीन व वसा जैसे अनेक पोषक तत्व पाये जाते है। हमारे लिए गर्व का विषय है कि भारत का दुग्ध उत्पादन में विश्व में पहला स्थान है। यहां पर विश्व के कुल दूध का 17 प्रतिशत दुग्ध उत्पादित होता है। भारत में वर्ष 2019–20 में लगभग 187 मैट्रिक टन दुग्ध का उत्पादन किया गया था। भारत में प्रति व्यक्ति दुग्ध उपलब्धता 394 ग्राम प्रति व्यक्ति है, जिसे ओर अधिक बढ़ाने की आवश्यकता है। भारत में प्रति पशु दुग्ध उत्पादन बहुत कम है। इस विषय पर ध्यान देने की आवश्यकता है। हमें पशुओं के चयन पर विशेष ध्यान देकर उत्पादन नहीं देने वाले तथा कम उत्पादन देने वाले पशुओं की संख्या को कम करने के साथ–साथ पशुपालन की वैज्ञानिक पद्धति को अपनाते हुए उस पर अधिक ध्यान केन्द्रीत करना होगा।

एक बार पुनः आप सभी को विश्व दुग्ध दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

कर्नल (प्रो.) विष्णु शर्मा

राजुवास को नए पशु विज्ञान केंद्र की सौगात

राज्य में पशुधन उत्पादकता बढ़ाने और पशुपालकों की आजीविका उन्नयन के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार कार्यक्रमों की महत्ता को देखते हुए राज्य सरकार ने एक नए पशु विज्ञान केंद्र को खोलने की सौगात वेटरनरी विश्वविद्यालय को दी है। राज्य में पशुपालन विकास एवं कल्याण के मद्देनजर विश्वविद्यालय द्वारा अन्य जिलो में पशु विज्ञान केंद्र खोले जाने के प्रस्ताव की उपयोगिता को देखते हुए माननीय मुख्यमंत्री ने वर्ष 2021–22 की बजट घोषणा में जोबनेर में पशु विज्ञान केंद्र खोलने की घोषणा की थी। राज्य सरकार ने वेटरनरी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत इस नए पशु विज्ञान केन्द्र की स्थापना की क्रियान्विति हेतु प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति जारी कर दी है। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि वेटरनरी विश्वविद्यालय के इस 16वें पशु विज्ञान केंद्र की स्थापना के लिए पदों की स्वीकृति एवं केन्द्र के भवन निर्माण कार्य, आवश्यक उपकरण व फर्नीचर की खरीद तथा कार्यालय व्यय हेतु वित्तीय स्वीकृति भी सरकार ने प्रदान की है। कुलपति प्रो. शर्मा ने बताया की इस स्वीकृति के साथ ही पशु विज्ञान केन्द्र हेतु भुमि आवंटन, निर्माण कार्य एवं अन्य प्रशासनिक प्रक्रियाएं शीघ्र ही शुरू की जाएगी। वेटरनरी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत नए पशु विज्ञान केन्द्र प्रारंभ हो जाने से इस क्षेत्र के पशुपालकों को सीधा लाभ मिल सकेगा। उल्लेखनीय है कि राज्य के 15 जिलों में कार्यरत विश्वविद्यालय के पशु विज्ञान केन्द्र एक महत्वपूर्ण प्रसार अंग के रूप में पशुपालन प्रशिक्षण, सलाहकारी सेवा, तकनीकी हस्तान्तरण और रोग निदान जैसे प्रमुख क्षेत्रों में कार्य कर रहे है, साथ ही स्थानीय समस्याओं पर अनुसंधान एवं उनका समाधान जिलें में ही सम्भव हो ऐसे प्रयास किए जा रहे है।

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

कोरोना बचाव एवं टीकाकरण जागरूकता वेबिनार का आयोजन
कोरोना से बचाव हेतु टीकाकरण एक कारगर उपाय : डॉ. संजय कोचर

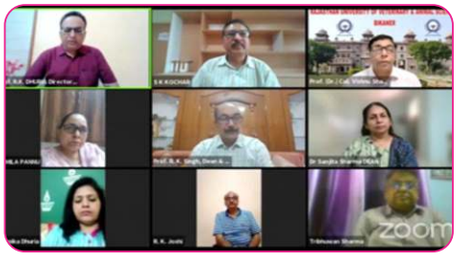

वेटरनरी विश्वविद्यालय के सामाजिक विकास एवं सहभागिता प्रकोष्ठ द्वारा "कोरोना से बचाव एवं टीकाकरण जागरूकता" विषय पर 8 मई को वेबिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि प्रदेश में कोरोना संक्रमण के बढ़ते मामलों के देखते हुए अब वेटरनरी विश्वविद्यालय सामाजिक सरोकार के तहत आमजन और छात्रों को इससे बचाव के उपायों के बारे में जागरूक करेगा। इसके लिए नियमित तौर पर वेबिनार का आयोजन किया जाएगा। एस.पी. मेडिकल कॉलेज, बीकानेर के सीनियर प्रोफेसर एवं मुख्य वक्ता डॉ. संजय कोचर ने कोरोना के फैलने के कारण, संक्रमण के लक्षण, बचाव के उपाय, कोरोना टीकाकरण के लाभ आदि विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की। वेबिनार का संयोजन निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने किया। अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर प्रो. आर.के. सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। वेबिनार के समन्वयक डॉ. अशोक डांगी, डॉ. दीपिका धूड़िया एवं डॉ. मनोहर सैन रहे। वेबिनार का सीधा प्रसारण विश्वविद्यालय के फेसबुक पेज पर किया जिसे पॉच हजार से भी अधिक लोगों ने देखा और सुना।

नांवा (नागौर) में खुलेगा नया वेटरनरी कॉलेज

नांवा (नागौर) में वेटरनरी विश्वविद्यालय के पांचवे नए संघटक पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय की स्थापना की क्रियान्विति हेतु राज्य सरकार ने प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति प्रदान कर दी है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि माननीय मुख्यमंत्री कीं वर्ष 2021–22 बजट घोषणा के तहत नवीन वेटरनरी कॉलेज नांवा (नागौर) हेतु 41 शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक पदों हेतु वित्तीय स्वीकृति प्रदान कर दी है, इसके साथ ही नवीन महाविद्यालय के भवन निर्माण, उपकरण, कैमिकल, ग्लासवेयर तथा कार्यलय व्यय की वित्तीय स्वीकृति प्रदान की है। इस स्वीकृति के साथ ही नवीन महाविद्यालय हेतु निर्माण कार्य एवं अन्य प्रशासनिक प्रक्रियाएं शीघ्र शुरू की जा सकेगी। वेटरनरी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत नए संघटक महाविद्यालय शुरू हो जाने से इन क्षेत्रों में पशुपालकों को सीधा लाभ मिल सकेगा एवं पशुचिकित्सा शिक्षा, शोध, प्रसार एवं नवाचारों को नए आयाम मिल सकेंगे।

पशुपालक कौशल विकास प्रशिक्षण अभियान का शुभारंभ

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा पशुपालक कौशल विकास प्रशिक्षण अभियान के तहत पशुपालकों के लिए कौशल विकास की नई मुहिम का शुभारंभ 17 मई को कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि राज्य के विभिन्न जिलों में स्थित सभी पशु विज्ञान केंद्रों द्वारा कौशल विकास प्रशिक्षण अभियान को श्रृंखलाबद्ध तरीके से चलाया जाएगा जिससे कि पशुपालक अपना कौशल विकास कर स्वरोजगार के रूप में अपना कर अपनी आमदनी बढ़ा सकें। कुलपति प्रो. शर्मा ने पशुपालन में प्रशिक्षण शिविरो में महिलाओं की भागीदारी भी सुनिश्चित करने व प्रशिक्षण में मार्केटिंग, बैंक व पशुपालन से संबंधित उद्योगों को भी सम्मिलित करने पर बल दिया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि पशुपालक कौशल विकास प्रशिक्षण अभियान के तहत राज्य के विभिन्न जिलों में स्थित पशु विज्ञान केंद्रो द्वारा जिलें के पशुपालकों के लिए तीन से पांच दिवसीय निशुल्क ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण दिया जाएगा। विभिन्न वैज्ञानिकों और विषय विशेषज्ञो द्वारा ऑनलाइन माध्यम से ही पशुपालकों से सीधा संवाद जाएगा, जिसकी शुरुआत बीकानेर जिले से की गई। इस अभियान के तहत प्रथम श्रंखला के रूप में पांच दिवसीय निशुल्क ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन पशु विज्ञान केंद्र, लूणकरनसर के द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रशिक्षण के विषय विशेषज्ञ प्रो. जितेंद्र सिंह मेहता, प्रो. जी.एन. पुरोहित, डॉ अशोक कुमार व डॉ स्वाति रोहिल भी उपस्थित रहे। इस निशुल्क ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम शिविर का संचालन प्रभारी अधिकारी, पशु विज्ञान केंद्र, लूणकरनसर आयोजन सचिव डॉ. अमित कुमार, डॉ. अशोक डांगी, डॉ. मनीष सोनगरा व डॉ. प्रमोद मोहता ने किया। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर में 80 से अधिक पशुपालकों ने भाग लिया।

ग्रामीण क्षेत्रों में टीकाकरण जागरूकता विश्वविद्यालय की पहल

ग्रामीण इलाकों में कोरोना के फैलने के मद्देनजर वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न जिलों में स्थित पशु विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से कोरोना टीकाकरण जागरूकता अभियान चलाया जायेगा। इस बाबत निर्णय कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित डीन–डॉयरेक्टर और अधिकारियों की ऑनलाइन बैठक में लिया गया। पशु विज्ञान केन्द्रों से जुडे पशुपालकों व ग्रामीणों को ऑनलाइन माध्यम से कोरोना टीकाकरण के प्रति संवेदन एवं जागरूकता पैदा कर टीकाकरण के लिए प्रेरित किया जाएगा। बैठक में कोरोना वायरस प्रकोप के मद्देनजर 'लॉकडाउन' की स्थिति में पशुचिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रसार कार्यों की समीक्षा की गई। कुलपति प्रो. शर्मा ने बताया कि वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के विभिन्न जिलों में स्थित पशु विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रत्येक जिले में किसानों एवं पशुपालकों के "व्हाट्सएप समूह" बनाएं गए हैं। पशुपालकों को घर बैठे ही मार्गदर्शन और सुझाव विश्वविद्यालय के पशु विज्ञान केन्द्रों द्वारा दिए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय ने अभिनव नवाचार करते हुए किसानों एवं पशुपालकों के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर प्रारम्भ किये है।

राजुवास स्थापना दिवस पर परिचर्चा

नई शिक्षा नीति में पशुचिकित्सा शिक्षा : परिदृश्य एवं संभावनाएं

वेटरनरी विश्वविद्यालय की स्थापना के ग्यारह वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में 18 मई को "नई शिक्षा नीति, पशुचिकित्सा शिक्षा : परिदृश्य एवं संभावनाएं" विषय पर ऑनलाइन परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रसार क्षेत्रों में प्रगति को प्रजेटेशन के माध्यम से बताया एवं कहा कि विश्वविद्यालय का राज्य के 22 जिलों में फैलाव हो चुका है। उन्होंने मुख्य उपलब्धियों पर चर्चा करते हुए बताया की राज्य सरकार ने हाल ही में नावा, नागौर में नवीन पशुचिकित्सा महाविद्यालय की घोषणा की थी जिसके लिए इन्फ्रास्ट्रेक्चर एवं मानव संसाधन हेतु वित्तिय स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। विश्वविद्यालय के तीनों वेटरनरी महाविद्यालयों को भारतीय पशु चिकित्सा परिषद् द्वारा मान्यता, विश्वविद्यालय को यू.जी.सी. 12 बी की मान्यता, पशुधन अनुसंधान फार्मों की कृषि भूमि का जैविक प्रमाणिकरण, राज्य सरकार द्वारा डेयरी साईंस और टेक्नोलॉजी महाविद्यालय एवं डेयरी और फुड टेक्नोलॉजी महाविद्यालय के लिए घोषणा, जयपुर स्थित दुग्ध जाँच प्रयोगशाला का एन.ए.बी.एल. प्रमाणिकरण, नये पशु विज्ञान केन्द्रों की स्थापना आदि प्रमुख है। बहुत ही अल्प समय में राजुवास एक मल्टी फैकल्टी विश्वविद्यालय बन गया है। कुलपति ने पशुधन एवं पशुपालकों के हित में किए जा रहे कार्यों और योजनाओं की जानकारी साझा की। सम्माननीय अतिथि प्रो. इन्द्रजीत सिंह, कुलपति, गुरू अंगद देव पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, लुधियाना, प्रो. के.एम.एल. पाठक, पूर्व उपमहानिदेशक आई.सी.ए.आर., नई दिल्ली, भारतीय पशु चिकित्सा परिषद् के अध्यक्ष डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा एवं राजुवास के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि नई शिक्षा नीति के अनुसार पशुचिकित्सा एवं पशु पालन के क्षेत्र में बहुसंकाय शिक्षा, उद्यमिता विकास, भविष्य के रोजगार सृजन, गुणवत्ता युक्त पशुचिकित्सा सेवाऐं उपलब्ध करवानी चाहिए। पशुधन स्वास्थ्य के साथ ही हमें विद्यार्थियों मे नैतिक मूल्यों का भी समावेश शिक्षा के तहत करना होगा। राजुवास के बोर्ड ऑफ मैनेजमेट के सदस्य उद्योगपति अशोक मोदी, डॉ. अमित नैन, पूर्व अधिष्ठाता प्रो. बी.के. बेनिवाल एवं प्रो. राकेश राव ने भी परिचर्चा में अपने विचार रखे। इस परिचर्चा में प्रो. ए.पी.व्यास, कुलसचिव अजित सिंह, वित्तनियन्त्रक प्रताप सिंह पूनिया, राजुवास के डीन–डायरेक्टर, शिक्षक, कर्मचारी, विद्यार्थी एल्युमुनाई, पशुपालक एवं किसान विश्वविद्यालय की वेबसाईट, फेसबुक पेज से जुड़े। लगभग 85000 लोगो तक इस परिचर्चा की पहुंच रही। प्रो. आर.के. सिंह अधिष्ठाता वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर ने परिचर्चा के आरम्भ में सभी का स्वागत किया। प्रो. हेमन्त दाधीच ने परिचर्चा का संचालन किया। आयोजन सचिव प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। डॉ. अशोक डांगी, प्रभारी, आई.यू.एम.एस. आयोजन सह–सचिव रहे।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलटी

गाढ़वाला में कोरोना बचाव हेतु जागरूकता एवं काढ़ा वितरण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी–सोशल रिस्पोसिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव गाढ़वाला में 28 मई को आयुर्वेदिक विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वाधान में कोरोना से बचाव हेतु आयुर्वेदिक काढ़ा बनाकर वितरण किया गया। आयुर्वेद विभाग, बीकानेर के चिकित्सा अधिकारी डॉ. इरशाद रफीक के निदेशन में उप स्वास्थ्य केन्द्र में काढ़ा बनाकर ग्रामवासियों को वितरित किया गया। डॉ. देवीसिंह की देखरेख में इस अभियान के तहत ग्रामीणों को कोरोना से बचाव हेतु मास्क का वितरण भी किया गया एवं कोरोना से बचाव हेतु आवश्यक जानकारी प्रदान की गई। पाँच सौ से अधिक ग्रामवासियों ने काढ़े का सेवन किया। इस अवसर पर औषधीय पौधे गिलोय की कटिंग भी ग्रामवासियों को वितरित की गई तथा उप स्वाथ्य केन्द्र में गिलोय का पोधारोपण भी किया गया। विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि कोरोना महामारी का अब शहरों के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी फैलाव हो गया है अतः इससे बचाव हेतु हमें ग्रामीणों को जागरूक करके राज्य सरकार द्वारा जारी कोरोना के निर्देशो के पालना हेतु प्रेरित करना होगा। इस अभियान में जिला आयुर्वेद विभाग, बीकानेर के उपनिदेशक डॉ. रमेश चन्द्र सोनी, सरपंच प्रतिनिधि मोहनलाल, उपस्वास्थ्य केन्द्र गाढवाला के नर्सिग कार्मिक सुरेन्द्र एवं आयुर्वेद विभाग बीकानेर के कार्मिक सुरेन्द्र कुमार का सहयोग रहा।

जयमलसर में कोरोना से बचाव हेतु काढ़ा वितरण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी–सोशल रिस्पोसिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव जयमलसर में 31 मई को आयुर्वेदिक विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वाधान में कोरोना से बचाव हेतु आयुर्वेदिक काढ़ा बनाकर वितरण किया गया। आयुर्वेद विभाग, बीकानेर के चिकित्सा अधिकारी डॉ. घनश्याम रामावत के निर्देशन में गांव जयमलसर में काढ़ा बनाकर ग्रामवासियों को वितरित किया गया। डॉ. विरेन्द्र की देखरेख में इस अभियान के तहत ग्रामीणों को कोरोना से बचाव हेतु आवश्यक जानकारी भी प्रदान की गई। लगभग छः सौ ग्रामवासियों ने काढ़े का सेवन किया। इस अभियान में जिला आयुर्वेद विभाग, बीकानेर के उप निदेशक डॉ. रमेश चन्द्र सोनी, जयमलसर के कृपाल दान चारण एवं आयुर्वेद विभाग बीकानेर के कार्मिक सुभाष कुमार का सहयोग रहा।

राज्य स्तरीय ई-पशुपालक चौपाल का आयोजन

संतुलित आहार से ही पशुओं में अधिक उत्पादन संभव

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्यस्तरीय ई–पशुपालक चौपाल 12 मई को आयोजित की गई। पशुओं के लिए संतुलित आहार का महत्व विषय पर चौपाल में प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि पशुपालन में 60 से 70 प्रतिशत लागत पशु आहार पर आती है अतः संतुलित पशु आहार से इस खर्चे को कम करके पशुपालन को लाभदायक बनाया जा सकता है। पशुओं में उचित स्वास्थ्य, उचित प्रजनन एवं अधिक उत्पादन हेतु संतुलित पशु आहार का बहुत महत्व है। इसके अभाव में पशुओं के स्वास्थ्य में गिरावट आती है एवं पशु उत्पादन का भी ह्रास होता है। आमन्त्रित विशेषज्ञ प्रो. त्रिभुवन शर्मा, निदेशक मानव संसाधन विकास निदेशालय ने पशु पोषण एवं संतुलित आहार पर विस्तृत रूप से परिचर्चा करते हुए बताया कि संतुलित पशु आहार में सभी आवश्यक पोषक तत्व प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन एवं खनिज लवण पर्याप्त मात्रा एवं अनुपात में यदि उपस्थित हो तो पशुओं की शारीरिक वृद्धि के साथ–साथ पशु उत्पादकता बढाने में सहायक होते है। प्रो. शर्मा ने नमक, खनिज लवण, बायपास प्रोटीन, बायपास फैट और विटामिन संपूरक के पशु प्रजनन, पशु स्वास्थ्य, पशु उत्पादन को बनाए रखने में उपयोगिता पर प्रकाश डाला। ई–पशुपालक चौपाल में राज्यभर के पशुपालक, किसान विश्वविद्यालय के अधिकारिक फेसबुक पेज से जुड़े।

घोड़ो का वैज्ञानिक प्रजनन एवं प्रबंधन

विश्वविद्यालय द्वारा 26 मई को आयोजित ई–पशुपालक चौपाल में कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने परिचर्चा के विषय को सामायिक बताते हुए कहा कि अश्व प्रजनन एवं प्रबंधन में कौशल विकास की मांग लगातार बढ़ रही है अतः युवा एवं अश्वपालक अश्व पालन में ज्ञान एवं कौशल अर्जित करके स्वरोजगार को अपना सकते है। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि घोड़े राजस्थान की कला एवं सस्कृति का अभिन्न अंग रहे है एवं इनकी संख्या में बढोतरी हेतु उनके उचित सरंक्षण, उन्नयन एवं वैज्ञानिक तौर पर रखरखाव की आवश्यकता है। आमन्त्रित विशेषज्ञ, डॉ. एस.सी. मेहता, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी राष्ट्र अश्व अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर ने अश्व प्रजनन एवं प्रबंधन पर विस्तृत परिचर्चा करते हुए बताया कि घोड़ो की मुख्यतः तीन नस्ले मारवाड़ी या मलानी, सिंधी एवं नुकरा घोड़ा राजस्थान में पाले जाते है। घोड़ो के चुनाव में उनकी वंशावली, प्रदर्शन, ऊचांई एवं रंग बहुत महत्त्व रखते है। प्रजनन हेतु अच्छी नस्ल एवं प्रयोजन के उदेश्य के अनुसार ही घोड़े की नस्ल का चुनाव करना चाहिए।घोड़ो को बीमारियों से बचाने हेतु प्रतिवर्ष रेबीज एवं टीटनस का टीका अवश्य लगवाना चाहिए एवं हर छः माह के अन्तराल में कृमिनाशक दवाई पिलानी चाहिए। अश्व पालन क्षेत्र में रोजगार बढ़ाने हेतु घुड़सवारी एवं अश्व दौड़ प्रतियोगिताओं को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे इस व्यवसाय से जुड़े लोगों को रोजगार उपलब्ध हो सके तथा अश्व के संरक्षण एवं उन्नयन को बढ़ावा मिल सके।

समय रहते पशुओं को संक्रामक रोग से बचाएं

पशुओं में अधिक कार्य क्षमता और अधिक उत्पादन क्षमता के लिए यह जरूरी है कि पशु स्वस्थ रहें और अच्छे स्वास्थ्य के लिए पशुओं को अच्छा संतुलित पशु आहार उत्पादन के अनुसार मिलता रहना भी जरुरी है। पशु यदि संक्रामक रोगों से मुक्त होगा तभी पशु उत्पादक हो सकता है। संक्रामक रोग ऐसे रोग हैं जो एक पशु से दुसरे पशु में संपर्क से फैलते हैं। यदि एक पशु संक्रामक रोग से ग्रसित हो जाता है तो उसके संपर्क में आने वाले अन्य पशुओं के भी रोगग्रस्त होने की संभावना बढ़ जाती है। पशुओं में संक्रामक रोगों के कारण पशु अकाल मौत के शिकार हो जाते हैं या उनका स्वास्थ्य इतना खराब हो जाता है कि उनके कार्य करने की क्षमता, उनकी दूध उत्पादन क्षमता, उनके गर्भधारण करने की क्षमता कम हो जाती है। यहां तक कि कुछ संक्रामक रोग के पशुओं से मनुष्य में भी फैलने की संभावना रहती है। इस प्रकार संक्रामक रोगों के कारण हमारे पशुपालकों को बहुत आर्थिक उठानी पड़ सकती है अतः यह बहुत जरूरी है कि पशुपालक भाई समय रहते अपने पशुओं को संक्रामक रोग से बचाएं। पशुओं में संक्रामक रोग के कई कारण हो सकते हैं। ज्यादातर पशुओं में संक्रामक रोग जीवाणु या विषाणु के द्वारा होते हैं। ये जीवाणु और विषाणु एक पशु से दूसरे पशु में भोजन के द्वारा, सांस के द्वारा, चमड़ी के द्वारा, आंख के द्वारा, थनों के द्वारा इत्यादि से फैल सकते हैं। अधिकतर जीवाणु, विषाणु और कीटाणु बीमार पशुओं के मलमूत्र, गोबर आदि का भोजन सामग्री जैसे चारा, दाना, पानी आदि में मिलने के कारण भोजन के द्वारा दुसरे पशु के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। खुरपका मुंहपका रोग, गलघोटू, रेबीज आदि रोग एक पशु से दूसरे पशुओं में बीमार पशु के भोजन द्वारा फैलते हैं। पशु माता टयूबरकुलोसिस, इन्फ्लूएंजा, जुखाम, खांसी, डिप्थीरिया आदि रोग बीमार पशुओं के सांस, के भोजन द्वारा फैलते हैं। कुछ संक्रामक रोग जैसे टिटनेस, एंथ्रेक्स आदि एक पशु से दूसरे पशुओं में चमड़ी के द्वारा फैलते हैं। जब स्वस्थ पशु की चमड़ी में खरोच, घाव, फोड़े फुंसी आदि हो जाते हैं तो कुछ कीटाणु रोगी पशु में इन छिद्रों के द्वारा शरीर में प्रवेश कर जाते हैं तथा दूसरे पशुओं में भी यह रोग फैल जाते हैं। पशुओं के थनों के छिद्र से भी रोग पशु शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। दूध देने वाले पशुओ में मैस्टाइटिस नामक रोग थनों के छिद्रों द्वारा ही एक पशु से दूसरे पशुओं में फैलता है। पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाने का सबसे आसान तरीका यह है कि इन रोगों के लिए रोगनिरोधक टीकों का उपयोग किया जाए। टीकाकरण से पशुओं में रोग प्रतिरोधक क्षमता पैदा की जाती है और पशु टीका लगने के 10 से 20 दिनों बाद उस रोग से ग्रसित नहीं हो सकते हैं। टीके हमेशा समय पर लगाने चाहिए क्योकि रोग प्रतिरोधक क्षमता टीके लगते ही पशुओं में पैदा नहीं होती इसमे कुछ समय लगता है अतः समय पर पशुओं का इन रोगों से बचाव के लिए टीकाकरण अवश्य कराएं। संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए पशुपालक निम्न बातों का भी ध्यान रखें।

- ❖ पशु को हमेशा स्वच्छ हवादार जालीदार व खुले स्थान पर ही रखें।
- ❖ पशुओं को उन क्षेत्रों से नहीं खरीदें जहां पर ये संक्रामक रोग फैल रहा हो।
- ❖ पशु को सदैव साफ पानी और संतुलित आहार देना चाहिए।
- ❖ रोगी पशु का पानी, चारा दाना किसी अन्य पशु के संपर्क में नहीं आना चाहिए।
- ❖ पशु का चारा दाना और पानी स्वच्छ होना चाहिए।
- ❖ रोगी पशु को सबसे अलग करके अलग स्थान पर बांधना चाहिए।
- ❖ पशुशाला को साफ और स्वच्छ रखने के लिए कीटाणुनाशक घोल जैसे फिनायल आदि का उपयोग करना चाहिए।
- ❖ पशुशाला में किसी प्रकार की मक्खी, मच्छर, चीचड़ नहीं रहने चाहिए।
- ❖ बीमार पशु होने पर तुरंत पशुचिकित्सक से उपचार करवाना चाहिए।
- ❖ पशु की अचानक मृत्यु होने पर पशुचिकित्सक को इस संबंध में सूचित करें संभव है कि पशु संक्रामक बीमारी से मरा हो।
- ❖ संक्रामक रोगों से मरे पशु को जला देना चाहिए या कहीं गहरे गड्ढे में उसके ऊपर काफी मात्रा में नमक छिड़क कर दबा देना चाहिए।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 5, 11, 18 एवं 25 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 88 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 5, 10, 17, 20 एवं 25 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 141 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 7, 13, 17, 21 एवं 25 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 102 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया –लाड़नू द्वारा 8, 11, 15, 19, 24 एवं 28 मई को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 144पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 3, 7, 11, 15, 19, 24 एवं 28 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 145 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 4, 10, 17, 21, 25 एवं 31 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 195 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 7, 11, 13, 17, 20, 22 एवं 25 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 183 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 4, 7, 13, 15, 19, 22 एवं 25 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 175 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र,बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौडगढ़) द्वारा 6,10, 13, 18, 20 एवं 25 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 95 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 8, 13, 27, 29 एवं 31 मई को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण तथा दिनांक 17–21 मई को पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 246 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनं द्वारा 4, 6, 17, 20, 24 एवं 27 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 143 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 5, 10, 15, 19, 22 एवं 25 मई को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 120 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 7, 10, 13, 21, 24 एवं 27 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 126 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 5, 7, 10, 17, 18, 20, 25 एवं 27 मई को कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 231 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरनसर और पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा कोविड़-19 बचाव एवं टीकाकरण जागरूकता अभियान

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर एवं पशु विज्ञान केन्द्र झुंझुनूं द्वारा कोविड़–19 महामारी के बढ़ते प्रकोप के मद्देनजर इस वैश्विक महामारी के बचाव अभियान कार्यक्रम के तहत आनलाईन कोविड़–19 बचाव एवं टीकाकरण जागरूकता अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. अनुराग गिल, चिकित्सा अधिकारी, कोविड़ सेंटर, राजस्थान स्वास्थ्य विश्वविद्यालय, जयपुर ने पशुपालकों को कोरोना महामारी के लक्षणों, टीकाकरण एवं सावधानियों के बारे में उचित जानकारी देकर मास्क का प्रयोग करने, हाथों को बार–बार सैनिटाइजर करने व सामाजिक दूरी रखने की सलाह दी। आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. सत्यवीर सिंह जाखड़ ने क्षेत्र के पशुपालकों, किसानों, ग्रामीण बुजुर्गो सहित क्षेत्र के आमजन को कोरोना महामारी के प्रति रोग–प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के नुस्खों, कोविड़–19 के महामारी से बचाव एवं इस रोग के बारे में सावधानियां बरतने की जानकारी दी। पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर के प्रभारी अधिकारी डॉ. अमित कुमार एवं पशु विज्ञान केन्द्र झुंझुनूं के प्रभारी अधिकारी डॉ. प्रमोद कुमार ने कोरोना महामारी से बचाव के लिए टीकाकरण करवाने व मास्क तथा सैनिटाइजर का उपयोग करने के साथ–साथ सामाजिक दूरी बनाएं रखने की सलाह दी।

दूधारू पशुओं के लिए पशु आहार कैसे बनाऐं

दूध उत्पादन के मामले में भारत दुनिया में नंबर वन हैं, दुध का उत्पादन पशुओं की सेहत पर निर्भर करता हैं, पशु सेहतमंद होंगे, उन का खानपान अच्छा होगा, तभी वे ज्यादा दूध दे पांएगे, तो जानें, पशुओं को सेहतमंद रखने के लिए उनकी खुराक कैसी हो–

अच्छी नस्ल के दुधारू पशु जिस तरह से डेरी फार्मिंग के लिए जरूरी होते हैं, उसी तरह से दुधारू पशु भरपुर मात्रा में दूध दें, इसके लिए उनको सही और पौष्टिक आहार खिलाना जरूरी होता है। संतुलित पशु आहार खिलाने से पशुओं में दूध देने की अवधि बढ़ती हैं, दूध के उत्पादन की लागत में 20 फीसदी तक की बचत होती है. पशुओं को बीमारियां भी कम लगती हैं और डाक्टरी खर्च में 70 फीसदी तक की कमी आती हैं। जब पशुओं की सेहत ठीक रहती हैं, तो उनका जीवन काल बढ़ जाता हैं. दूध उत्पादन के लिए पशुओं का समय–समय पर प्रजनन करना जरूरी होता हैं. प्रजनन क्रिया के लिए अलग–अलग तरह के पौष्टिक तत्वों की जरूरत होती है. पशुओं को चारे में बिनौले की खली, सरसों की खली, चने की चुरी और गैंहू के चोकर का इस्तेमाल किया जाता है. लेकिन इन चारों से पूरे तौर पर पौष्टिक आहार नहीं मिलता।

आहार खिलाएं ज्यादा दूध पाएं: पशुओं के वैज्ञानिक बताते हैं कि पशुओं को खानें के लिए पशु आहार देना बहुत जरूरी होता है. आहार सरसों की खली. बिनौले की खली, सोयाबीन की खली, सूरजमुखी की खली, चने की चुरी, अरहर की चुरी, छिलका गैंहू, मक्का, जौ, चावल की पालिश, शीरा, डाई कैल्शियम फास्फेट, हर्बल पोषक तत्व, खनिज तत्व, नमक, विटामिन ए, डी–3 और ई को मिला कर तैयार किया जाता हैं। दुधारू पशुओं की दूध देने की अवधि एक बार बच्चा देने के बाद 300 दिन की होनी चाहिए. आमतौर पर यह अवधि 210 से 240 दिन की होती हैं. पशु को 45 से 90 दिन के अंदर दोबारा ग्याभिन कर लेना चाहिए। यह तभी संभव हैं, जब पशुओं को प्रजनन के लिए जरूरी खनिज लवणों जैसे कैल्शियम, फास्फोरस, जस्ता, तांबा, कोबाल्ट, मैंग्नीशियम मुहैया कराए जाएं, यह केवल पशु आहार से ही संभव है, केवल खली और चुरी खिला देने से प्रजनन के लिए जरूरी खनिज तत्वों की पूर्ति नहीं हो पाती है।

प्रजनन में मददगार पशु आहार : खनिज लवणों में कमी आने से मादा पशु में गर्मी ही नही आती हैं. अगर गर्मी आती भी हैं, तो कई बार अंडा नहीं बनता। पशुपालन का भरपूर फायदा उठाने के लिए गाय में 12–13 महीने और भैंस में 14–15 महीने में एक ब्यात लेना जरूरी होता है. अच्छे पशु आहार में सोंट, अजवाइन, मेथी, शतावर, अकलकारा जैसी जड़ी बूटियों का इस्तेमाल किया जाता हैं। प्रजनन के समय इसको खाने से पशुओं का हाजमा ठीक रहता हैं. थनों में दूध का बहाव बढ़ता है और दूध भी तेजी से बनता है. हर्बल पोषक तत्व पशुओं की चरबी बढ़ाने के बजाय दूध बढ़ाने में मददगार होते हैं और डेरी फार्मिंग पूरी तरह से चार्मिंग लगने लगती है।

दुधारू पशुओं को आहार सही तरह से खिलाना चाहिए. जब आहार सही तरह से नहीं खिलाया जाता, तब वे सही नतीजे नहीं देते हैं. पशु आहार दुध दुहने के समय सुखा या सानि कर के खिलाना फायदेमंद होता है, इसको खिलाने से पहले 15–20 मिनट तक पानी में भिगो कर रखना चाहिए। पानी में भीगे पशु आहार को भूसे में मिला कर सानी के साथ दूध दुहने से आधा घंटा पहले खिलाना चाहिए. आहार को ठंडी जगह पर रखना चाहिए. पशु से अच्छा दुध लेने के लिए एक लीटर दूध के पीछे 5 लीटर साफ पानी पशुओं को जरूर पिलाना चाहिए।

आहार में मिलने वाले तत्व : पशुओं का आहार प्रोटीन, चोकर, खनिज लवण और ऊर्जा से बनता है. प्रोटीन के लिए मूंगफली की खली, सरसों की खली, बिनौले की खली, सोयाबीन की खली और सूरजमुखी की खली होती हैं. प्रोटीन के साथ ही साथ पशु आहार में कई अनाजों का चोकर भी मिलाया जाता हैं. इनमें चने की चुरी, अरहर की चूरी, छिलका और गेंहू का चोकर शामिल होता हैं। पशु आहार को पौष्टिक बनाने में खनिज लवण को भी शामिल किया जाता है. इसमें हर्बल पोषक तत्व एनीफीड, डाई कैल्शियम फास्फेट, सूक्ष्म खनिज तत्व, नमक, विटामिन ए, डी–3 और ई मिले होते हैं. ऊर्जा के लिए पशु आहार में गेंहू, मक्का, जई, बाजरा, चावल की पालिश और शीरा शामिल किया जाता हैं।

आहार की सही मात्रा : पशुओं को सही मात्रा में आहार खिलाना चाहिए. दुधारू पशुओं के लिए इसका खास खयाल रखा जाना चाहिए. गाय को डेढ़ किलो पशु आहार रोज देना चाहिए. तीन लीटर दूध पर एक किलो पशु आहार दें। दूध की मात्रा बढ़ने पर आहार की मात्रा भी बढ़ानी चाहिए। भैंस को दो लीटर दूध पर एक किलो आहार रोज दिया जाना चाहिए। ग्याभिन होने के छठे महीने से गाय और भैंस दोनों को ही डेढ़ किलो आहार दिया जाना जरूरी होता हैं. बछिया को कम उम्र में ग्याभिन करने लायक बनाने के लिए एक किलो आहार रोज दिया जाना चाहिए। बोझ ढोने वाले पशु बैल और भैंसा को डेढ़ किलो प्रतिदिन आहार देना चाहिए।

डॉ. मुकेश चन्द शर्मा, डॉ.मुकेश कुमार मीणा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजून्दा चित्तोडगढ़

पशुपालन विभाग द्वारा राज्यस्तरीय पशुपालक सम्मान के लिए आवेदन आमंत्रित

कृषि और पशुपालन को बढ़ावा देकर ही ग्रामीण क्षेत्र की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाया जा सकता है। इसी के दृष्टिगत हर साल पशुपालन विभाग राज्य स्तरीय पशुपालक सम्मान समारोह आयोजित करता है, ताकि पशुपालकों को प्रोत्साहित कर उन्हें पशुधन विकास की मूल धारा से जोड़ा जा सके। वित्तीय वर्ष 2021–22 में पशुपालक सम्मान समारोह योजनान्तर्गत प्रगतिशील पशुपालकों के चयन के लिए पशुपालन विभाग ने मार्गदर्शिका जारी की है। इस योजना का उद्देश्य पशुपालकों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धात्मक भावना उत्पन्न करना, पशुपालकों को समृद्ध एवं उन्नत नस्ल के पशु रखने के लिए प्रेरित कर उत्साहवर्धन करना है तथा आधुनिक एवं नवीनतम तकनीकी द्वारा पशु देखभाल करने से उत्पादकता पर प्रभाव दर्शाना। योजनान्तर्गत ऐसे प्रगतिशील पशुपालकों का चयन किया जाएगा, जो पशुपालन के क्षेत्र में नवाचार कर पशुधन उत्पादन के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए हो तथा नियमित टीकाकरण, कृमिनाशक दवा का उपयोग करता हो एवं वत्स में मृत्यु दर कम हो। साथ ही पशुपालन की नवीनतम तकनीक का उपयोग कर उन्नत नस्ल के पशुओं का पालन करता हो, जो प्रदेश के अन्य पशुपालकों के लिए भी प्रेरणा का स्त्रोत बन सके। पशुपालन विभाग, राजस्थान सरकार ने राज्य स्तरीय पशुपालक सम्मान समारोह के चयन के लिए गाइडलादन जारी कर दी है, जिसमें प्रदेशभर के प्रगतिशील पशुपालक **31 अगस्त, 2021** तक आवेदन कर सकते है। इसके लिए पशुपालकों को अपने नजदीकी पशु चिकित्सालय में सम्पर्क करना होगा।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जून, 2021

पशु रोग	पशु प्रकार	प्रभावित जिले			
		अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम सभांवना	बहुत कम संभावना
लंगड़ा बुखार	गाय, भैंस	–	–	–	गंगानगर, झुन्झुनू, चूरू, सीकर, नागौर, जोधपुर, दौसा, अजमेर, भीलवाड़ा, बूंदी, उदयपुर, झालावाड, बारां
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	–
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	हनुमानगढ़, भरतपुर	–	–	–
खुरपका–मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	जयपुर, उदयपुर	–	–	अजमेर, अलवर, बारां, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, चूरू, दौसा, धौलपुर, गंगानगर, झालावाड़, जोधपुर, नागौर, राजसमंद, सीकर, टोंक
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	–	–	–	बाड़मेर, भरतपूर, भीलवाड़ा, बूंदी, जयपुर, जोधपुर, नागौर, सीकर
पी.पी.आर.	बकरी	चूरू	–	जोधपुर	अजमेर, दौसा, पाली, बाड़मेर, भरतपूर, धौलपुर, जयपुर, सीकर, झुन्झुनू, करौली, नागौर, प्रतापगढ़, राजसमंद, जैसलमेर, उदयपुर
मातारोग	भेड़, बकरी	हनुमानगढ़	–	–	–
थीलेरिओसिस	गाय के बछड़े	–	–	–	–
ट्रीपनोसोमियोसिस	ऊँट, गाय, भैंस	–	–	–	–
बबेसियोसिस	गाय, भैंस	उदयपुर	राजसमन्द	–	–

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के.सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं. 0151-2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

मधुमक्खी पालन स्वःरोजगार से गांव में प्रकाश

अगर जिन्दगी में आगे बढ़ना है तो नए विचारो पर कार्य करना होगा। सही योजनाएं एवं प्रशिक्षण के जरिये आप भी अपनी जिन्दगी में बदलाव ला सकते है। वैसे भी कोरोना माहमारी ने लोगों को बहुत कुछ सिखा दिया है, जो लोग अपने घर के आसपास रहकर ही कुछ करना चाहते है उनके लिए बहुत सारे स्वःरोजगार के विकल्प खुले है, जिसमें मधुमक्खी पालन छोटे व भूमिहीन किसानों के लिए स्वःरोजगार का एक काफी अच्छा विकल्प हो सकता है। हम बात कर रहें है, हनुमानगढ़ जिले की नोहर तहसील के गांव–ढाणी अराईयान के एक ऐसे ही मध्यम वर्गीय परिवार के आठवीं पास युवा किसान प्रकाश सिंह जटसिख की, जिसने मधुमक्खी पालन को अपना स्वःरोजगार का साधन बनाया। प्रकाश सिंह की पढ़ाई में रूचि नहीं होने के कारण उन्होंने आठवीं कक्षा के बाद पढाई छोड़ दी और वे अपने पिता के साथ खेती करने लगे। प्रकाश सिंह के पास पुस्तैनी जमीन में 10 बीघा सिंचित व 10 बीघा असिंचित भूमि क्षेत्र है जिसमें परम्परागत तरीके और वर्षा आधारित खेती से वे प्रतिवर्ष ग्वार, मूंग, मोठ, चना व सरसों इत्यादि की फसल लेते रहें। परन्तु उन्हें खेती में मनचाह मुनाफा नहीं मिलने के कारण उन्होनें खेती के साथ–साथ कोई और स्वःरोजगार करने की सोची। वर्ष 2016 में उन्होनें मधुमक्खी पालन करना आरम्भ किया। शुरूआत में वे 30 बक्से खरीद कर लायें परन्तु उचित जानकारी व प्रशिक्षण न होने के कारण उन्हें प्रथम एक से दो वर्ष कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ा तथा इन परेशानियों से निराश होने लगे, परन्तु उन्होनें मधुमक्खी पालन करना नहीं छोड़ा और वे एक दिन सोशल मीडिया के माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के सम्पर्क में आयें उन्होनें केन्द्र के विशेषज्ञों की राय के अनुसार अपने मधुमक्खी पालन रोजगार को सुचारू रूप से आगे बढ़ाया तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर से मधुमक्खी पालन एवं प्रबंधन विषय पर चार दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। इस प्रकार वे मधुमक्खी पालन में निरन्तर प्रगति करते हुए वर्तमान में प्रकाश सिंह के पास कुल 215 मधुमक्खी पालन के बक्से है, जिससे उन्हें शहद, मोम, प्रोपोलस इत्यादि उत्पाद बेचकर प्रतिवर्ष लगभग 3000 रू. प्रति बाक्स आय प्राप्त होती है उन्होनें इस रोजगार में एक सहायक सहयोगी भी रख–रखा है उसकी मजदूरी, परिवहन लागत व अन्य सभी खर्चो के बाद उन्हें 4.15 लाख रू. की शुद्व आय मधुमक्खी पालन से प्राप्त हो जाती है। उनकी इस कामयाबी के चलते गांव के अन्य बेरोजगार युवा भी स्वःरोजगार की ओर बढ़ रहे हैं। प्रकाश सिंह निरन्तर कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के विशेषज्ञों के सम्पर्क में रहकर अन्य युवाओं को भी केन्द्र से प्रशिक्षण लेने के लिए प्रेरित कर रहें हैं।

सम्पर्क– प्रकाश सिंह जटसिख गांव–ढाणी अराईयान, नोहर जिला हनुमानगढ़ (मो. 9079204246)

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

गर्मी के मौसम में पशुओं की देखभाल

भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुपालन का विशेष महत्व है। पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार है। राजस्थान जैसे सुखे प्रदेश जहां वर्षा बहुत कम होती है वहां पर पशुपालन आजीविका का प्रमुख स्त्रोत है। बदलते मौसम का पशुओं के स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है और इस समय गर्मी अपने चरम पर है। अतः गर्मी के कारण पशुओं में होने वाली बीमारियों के प्रति सावधान रहने की आवश्यकता है। क्योंकि बेहद गर्म मौसम में जब वातावरण का तापमान 42–48 डिग्री सेल्शियस तक पहुंच जाता है, और लू के थपेड़े चलने लगते है तो पशु दबाव की स्थिति में आ जाते है। इस समय पशु के पाचन तंत्र व दुग्ध उत्पादन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः गर्मी के मौसम में पशुओं की विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है। गर्मी के मौसम में नवजात पशुओं की देखभाल पर विशेष ध्यान देना चाहिए। क्योंकि नवजात पशुओं की देखभाल में तनिक असावधानी पशु की शारीरिक वृद्धि, स्वास्थ्य, रोग प्रतिरोधक क्षमता व उत्पादन क्षमता पर गहरा प्रभाव डालती है। गर्मी के कारण पशु के चारा खाने की क्षमता व उत्पादन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यही पशु आगे बरसात के मौसम में कई बीमारियों से ग्रसित हो सकते हैं। अतः गर्मी के मौसम में पशुओं को सुरक्षित रखने हेतु विशेष प्रबंधन की आवश्यकता होती है। इस समय पशुओं को ठण्डे व छायादार पशु आवास में रखने के साथ पीने के लिए हर समय स्वच्छ पानी उपलब्ध करवावें, सीधी तेज धूप और लू से पशुओं को बचाने हेतु पशु आवास में खस या जूट के पर्दे लगावें। इस समय पशुओं में हीट स्ट्रोक होने की सम्भावना ज्यादा होती है। अतः पशु के बीमार होने पर तुरन्त पशुचिकित्सक से सम्पर्क कर पशुओं का ईलाज करावें। गर्मी के मौसम में पशु के खान–पान पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। अतः पशु को हरा चारा अधिक से अधिक खिलावें इसके अलावा पानी में थोड़ा नमक व आटा मिलाकर पिलाना भी उपयुक्त रहता है। गर्मी में हरे चारे की कमी हो जाती है। अतः पशुपालक को गर्मी में हरे चारे की उपलब्धता के लिए मार्च–अप्रेल में मक्का, काऊपी आदि की बुवाई भी करवानी चाहिए जिससे गर्मी के मौसम में हरा चारा उपलब्ध हो सके। अतः पशुपालक भाई गर्मी के मौसम में उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर गर्मी के मौसम में होने वाले नुकसान से बच सकते है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर (मो. 9414283388)

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

''धीणे री बात्यां''

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया